

इंदौर की स्थापना एवं इंदौर नगर के विकास की भावी संभावनाओं का ऐतिहासिक विश्लेषण

शोधार्थी – आशुतोष कुररिया

सारांश –

भारत वर्ष के अधिकांश नगर किसी-न-किसी मानवीय आवश्यकता के आधार पर बसाए गए और कालान्तर में ये नगर भारतीय इतिहास व सांस्कृतिक विकास की कड़ी में महत्वपूर्ण बन गए। इसी परम्परानुसार उत्तर व दक्षिण के मध्य सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण यह स्थान इन्द्रपुर से धीरे-धीरे इंदौर में परिवर्तित हो गया तथा युग के साथ चल सकने की क्षमता के कारण यह नगर औद्योगिक, सांस्कृतिक एवं व्यापारिक केन्द्र बन गया। सन् 1818 ई. की मन्दसौर की सन्धि से इंदौर को स्थायी राजधानी बनाया गया। इसी से शहरीकरण की शुरुआत हुई, कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी।

मूलशब्द – शहरीकरण, इंदौर, भौगोलिक, व्यापार, प्रशासक

➤ प्रस्तावना -

इंदौर जो कभी इंदुर के नाम से जाना जाता था | धीरे-धीरे यह नाम इंदौर हो गया | इस नगर की उद्भव और विकास की एक बड़ी रोचक कहानी है। मातृश्री देवी अहिल्याबाई जो परम शिव भक्त थी। वह होलकर राजवंश की तीसरी शासिका थी। उनका कार्यकाल करीब 28 वर्ष 5 माह के करीब रहा। इंदौर के एक ओर महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग उज्जैन में तो दूसरी ओर ममलेश्वर ओंकारेश्वर में ओमकार जी दूसरे ज्योतिर्लिंग के रूप में विराजित है¹। इस भौगोलिक मनोदशा से यह स्पष्ट होता है कि नगर की दोनों बाजुओं में दो ज्योतिर्लिंग विराजित हैं। इंदौर की सुरक्षा और रक्षा का दायित्व भगवान शिव को समर्पित है। देवी अहिल्याबाई का हर आदेश शिव का आदेश कहा जाता था। वह परम शिव उपासिका थी। इसलिए इंदौर को भी यह सौभाग्य मिला है कि उसके दोनों ओर ज्योतिर्लिंग स्थित हैं।

इंदौर की स्थापना का श्रेय मल्हार राव होलकर को जाता है, जिन्होंने इंदौर के रूप में मराठा राज्य की स्थापना का दायित्व निभाया। इंदौर एक कस्बा जिसकी कहानी का प्रारंभ 17वीं शताब्दी की शुरुआत में हुआ था। इतिहासकार रघुवीरसिंह के अनुसार औरंगजेब के शासन में सनद का उल्लेख प्राप्त होता है। सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत की पर्वत

¹ राजन, अनुपम - आयुक्त, इंदौर इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व, संचालनालय पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय, भोपाल-वर्ष -2016-17, पृष्ठ -5

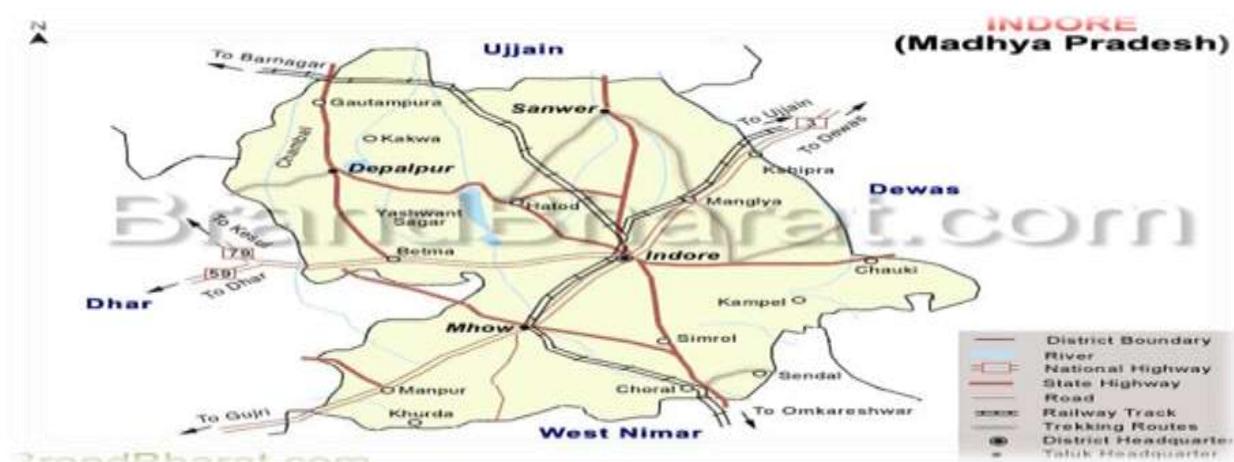
श्रृंखलाओं पर इंदौर स्थित है। मालवा का यह शहर जिसकी लुभावनी और मोहक जलवायु हर किसी को अपनी और आकर्षित करती है। जैसे सुबह-ए-बनारस, शब-ए-मालवा, शाम-ए-अवध के लिये प्रसिद्ध है।

➤ साहित्य संबंधित सर्वेक्षण –

मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र ऐतिहासिक काल से साहित्य से परिपूर्ण रहा है। इंदौर की स्थापना एवं इंदौर नगर के विकास की भावी संभावनाओं का विशेष रूप से हमें कई साहित्य में मिलता है। इसमें इंदौर का महत्वपूर्ण स्थान है आजादी के पहले गहन शोध और लेखन हुआ है। इस शोध में विभिन्न पुस्तकों और लेखकों के कार्यों का विश्लेषण किया जाएगा। इसमें मुख्य सर जॉन मेल्कम कि पुस्तक ए मेमायर ऑफ सेंट्रल इंडिया, रघुनाथ राव कि रिपोर्ट ऑन द एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ इंदौर 1877-78, और एल. सी धारीवाल, इंदौर स्टेट गजेटिय 1931 है।

➤ इन्दौर की भौगोलिक अवस्थिति :-

मध्यप्रदेश के पश्चिम भाग में मालवा के पठार पर समुद्र तल की सतह से 594 मीटर ऊँचाई पर प्रदेश का सर्वाधिक विकसित व औद्योगिक नगर इन्दौर स्थित है। मालवा की सुखद सुरम्य पठार के शिखर को शोभित करते हुये। इन्दौर जिले की सीमाएँ 22°20' उत्तर से 23°05' उत्तर अक्षांश और 75°25' पूर्व से 76°15' पूर्व देशान्तर तक फैली हुई है। यह उत्तर में उज्जैन जिले से, दक्षिण में निमाड जिले, पूर्व में देवास जिले से, पश्चिम धार जिले से घिरा हुआ है।²



वर्तमान इंदौर भौगोलिक परिदृश्य – (2025)

² प्रेमनारायण, श्रीवास्तव - इंदौर जिला गजेटियर, प्रकाशक -जिला गजेटियर विभाग, वर्ष -1974 पृष्ठ -05

इन्दौर जिले की तीन ओर प्राकृतिक सीमाएँ हैं। यथा पूर्व में क्षिप्रा नदी पश्चिम में चम्बल नदी तथा दक्षिण में करम नदी ओर चोरल नदियाँ जो दक्षिण में नर्मदा नदी में गिरती हैं। मध्य की विध्यंपर्वत की जल विभाजक रेखा और उत्तरी सीमा लगभग कृत्रिम सीमा है। इन्दौर जिले का क्षेत्रफल 3898 वर्ग कि.मी है। कुल वन क्षेत्र 708.85 वर्ग कि.मी. है³ कृषि योग्य भूमि 285102 हेक्टर, जिसमें 49769 हेक्टर भूमि सिंचाई होती है। जलवायु समशीतोष्ण और वर्षा का औसत 970.3 मि.मीटर है। विविधता के लिए भूमि में काली मिट्टी का बाहुल्य है।⁴

ऐतिहासिक अवधारणा :-

इंदौर नगर की स्थापना कम्पेल के जर्मींदारों द्वारा व्यापारिक उद्देश्य को लेकर की गई थी। राव राजा नंदलाल मंडलोई को मुगल बादशाह से कर मुक्त व्यापार की अनुमति 1716 को प्राप्त हुई थी। 1732 में इंदौर जिले को होलकर सूबेदार मल्हारराव होलकर ने अपनी जागीर में मिला लिया। इंदौर की राजमाता अहिल्याबाई इंदौर की स्थिति से बहुत प्रभावित हुई थी और तथा उन्होंने जिला मुख्यालय कम्पेल से इंदौर परिवर्तित कर दिया। सन 1818 की संधि मंदसौर की संधि के पश्चात इंदौर नगर को होलकर राज्य की राजधानी बनाया गया। होलकर राज्य के ही सफल प्रशासक तुकोजी होलकर द्वितीय द्वारा इंदौर नगर में नगरपालिका की स्थापना की गई।⁵

17वीं शताब्दी में और 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में कमजोर मुगल सत्ता ने मालवा में अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर दी। फलस्वरूप मालवा में मराठों के आक्रमण प्रारंभ हो गये। मल्हार राव ने कुशल नेतृत्व से इंदौर में होलकर राज्य की स्थापना की। होलकर राज्य में राजमाता अहिल्या बाई का नाम विशेष उल्लेखनीय है।⁶

मल्हारराव होलकर जो मालवा के होलकर राजवंश के पहले शासक थे। यह नगर एक क्रस्बा था, जो बाद में एक महानगर के आकार में दिखने लगा है। आज यह इंदौर प्रदेश के सबसे बड़ा विशाल आबादी बाला नगर है। खान और चंद्रभागा नदियों के तट पर एक ऊँचे टीले पर जूनी इंदौर बसा जो निश्चित रूप से परमारकालीन बस्ती है। यहाँ पर कम्पेल से आकर जर्मींदारों ने रावला कायम किया था।

³ <https://indore.nic.in>

⁴ . प्रेमनारायण , श्रीवास्तव - इंदौर जिला गजेटियर , प्रकाशक -जिला गजेटियर विभाग , वर्ष -1974 पृष्ठ -651

⁵ छजलानी, अभय , अपना इंदौर - भाग 4 , लाभचंद्र प्रकाशन , वर्ष -2019 , पृष्ठ - -106

⁶ यादव , शिवनारायण , अपना इंदौर -1 , प्रकाशक - लाभचंद्र प्रकाशन इंदौर , वर्ष -1997, पृष्ठ-12

वर्ष 1971 में नगर के आजादनगर क्षेत्र में किये उत्खनन से मिटटी के बर्तन, हाथी दन्त से निर्मित चूड़ियाँ और ताम्बे की मुद्राएं खोज में प्राप्त हुई थी। इस खोज और प्राप्त सामग्री का उल्लेख संसद में हुआ। मध्यप्रदेश के पुरातत्व विभाग ने आजादनगर के इस क्षेत्र को संरक्षित घोषित कर दिया था। 1972 में मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग और विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के एक सयुक्त अभियान जो प्रसिद्ध पुरातत्व शास्त्री डॉक्टर विष्णु श्रीधर वाकणकर के नेतृत्व में एक टीम एक साथ किया गया था। उत्खनन में प्राप्त सामग्री का डॉक्टर वाकणकर ने प्राप्त अवशेषों का क्रमबद्ध अध्ययन किया था। उन्होंने उल्लेख किया कि आजादनगर में प्राप्त सामग्री 3800 - 4000 वर्ष पूर्व का है। कायथा उत्खनन में मिली कायथा सभ्यता से महेश्वर उत्खनन से मिली धनखेड़ी टेकरी की प्राचीनता अवशेषों से साम्य रखता है।

इंदौर होलकरों राजाओं की नगरी के विषय में पौरोणिक वास्तु-शास्त्र सम्बन्धी भवन या कोई शिलालेख का अभाव है। 18वीं शताब्दी में निजाम की फौजों के मुकाबले लेने के लिए मराठा सेनाओं का पड़ाव इंदौर रहा करता था। उस दौरान सन 1741 में इन्द्रेश्वर मंदिर की स्थापना राष्ट्रकूटों द्वारा की।⁷ इसी मंदिर के नाम पर प्रथम इन्द्रेश्वर और इन्द्रपुर नाम हुआ। अंग्रेजी उच्चारण में यह इंदौर हो गया। कुछ लोग इंदौर का प्राचीन नाम इंदूर भी बताते हैं। होल्कर कालीन मराठी की पुस्तकों में इंदूर ही लिखे होने का उल्लेख मिलता है।

इंदौर के जन्म और विकास की कहानी अधिकतर मराठों के उत्थान और प्रचार से जुड़ी है। करीब 14वीं शताब्दी के अंत में मुस्लिम आक्रमण दक्षिण भारत में हुआ था। 18वीं शताब्दी से मराठों से वक्त मालवा में कई शासकों के अधीन रहा। 1728 में निजाम के आपसी विवाद का फायदा उठाकर बाजीराव पेशवा ने होल्कर और पंवार को मालवे से कर वसूल करने की सनद प्रदान की। 15 सितम्बर 1730 में सूबेदार मल्हारराव होल्कर ने कदम बांडे की सलाह पर पेशवा से आग्रह किया, कि उनके परिवार को स्थाई निवास की व्यवस्था की जाए। पेशवा ने सूबेदार मल्हारराव की पत्नी गौतमाबाई को खासगी के नाम पर देपालपुर और उसके आसपास के 74 गांव जागीर दी। इस तरह 3 अक्टूबर 1730 को इंदौर में होल्कर राजवंश की नीव पड़ी। 29 जुलाई 1732 को पेशवा ने अपने पत्र में मालवा का इंदौर मल्हारराव होल्कर दिया था।⁸ उनके निधन के बाद

⁷ राव होल्कर, मधुसूदन, मराठा साम्राज्य के भीष्मपितामह धनगर कुलभूषण श्रीमंत महराज मल्हारराव होल्कर (प्रथम), मल्हार प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2010, पृष्ठ -30

⁸ रायजादा, अजित, इंदौर कार्यालय आयुक्त, पुरातत्व एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश भोपाल, 1992, पृष्ठ - 9

मालेराव होल्कर फिर अहिल्या बाई होल्कर राज्य की शासक रही। मल्हारराव होल्कर होल्कर राजवंश के प्रथम शासक हुए।

। इस तरह होल्कर राजवंश में 14 शासक हुए।⁹



होलकर राज्य का मानचित्र

⁹ लुआर्ड , कैप्टन सी ई , इंदौर स्टेट गजेटियर - खंड -2 , सुप्रिंडेंट गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस , कोलकत्ता , वर्ष -1908 , पृष्ठ - 16

➤ इंदौर नगर के विकास की भावी संभावनाओं का ऐतिहासिक विश्लेषण –

किसी भी शहर के नियोजित विकास के लिए राज्य सरकार द्वारा सिटी एण्ड टाउन प्लानिंग विभाग की स्थापना की जाती है। इस विभाग का कार्य शहर के नियोजित विकास के लिए मास्टर प्लान तैयार करना तथा इसे स्थानीय प्रशासन के सहयोग से लागू करवाना होता है। 1976 में जो मास्टर प्लान बनाया गया था उसकी समय सीमा 1991 तक थी तथा इसके पश्चात् बनाया गया मास्टर प्लान न्यायालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया। इस सम्बन्ध में न्यायालय का कहना था कि इसमें जनभागीदारी होना आवश्यक है परन्तु वह किसी-न-किसी कारण से टलता गया। शहर की जो विकास योजना है वह टुकड़ों-टुकड़ों में बन रही है।

निवेश क्षेत्र विकास योजना 2011 में भी निवेश की सीमा विकास योजना 1991 के समान ही रखी गई है। निवेश क्षेत्र में 21410 हेक्टेयर क्षेत्र समाविष्ट है जिसमें से 410 हेक्टेयर क्षेत्र नदी, नालों, तालाबों आदि का भी सम्मिलित है। निवेश क्षेत्र में नगर पालिक निगम, इन्दौर का 130.17 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र भी शामिल है। विकास योजना 1991 में दर्शित नगर निगम का क्षेत्रफल 55.80 वर्ग किलोमीटर था। वर्तमान नगर पालिक निगम सीमा में 137.17 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र शामिल है।

स्थानीय शासन ने राज्य सरकार तथा जनसहयोग से विकास बॉण्ड जारी करने का फैसला किया है। जिससे प्राप्त राशि मुख्य रूप से शहर की सड़कों के निर्माण, मुख्य मार्गों के रख-रखाव एवं अन्य नियोजित विकास हेतु निर्माण कार्यों पर व्यय की जाना प्रस्तावित है।

शहरी क्षेत्रों में मुख्य मार्गों पर यातायात का दबाव कम करने के लिए शहर के बाहरी क्षेत्र से ही आने-जाने में सुविधा की दृष्टि से रिंग रोड़ का निर्माण किया गया है। शहर के मध्य क्षेत्र में कुछ फ्लाय ओवर बनाने की भी योजना है। रेल यातायात में इन्दौर स्टेशन पर गाडियों एवं यात्रियों के दबाव को कम करने के लिए लक्ष्मीबाई नगर रेल्वे स्टेशन को टर्मिनस के रूप में विकसित करने की योजना है।

इसी प्रकार इन्दौर नगर को महानगर के रूप में विकसित करने हेतु स्वास्थ्य सेवाओं के विकास के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही नए इन्दौर की बसाहट में इस बात का भी ध्यान रखा जा रहा है कि वहाँ सेक्टर पार्क, बच्चों के पार्क, खेल के मैदान आदि की पर्याप्त व्यवस्था हो। साथ ही पुलिस स्टेशन, फायर स्टेशन आदि की समुचित व्यवस्था करने के भी सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। सांस्कृतिक एवं शैक्षिक विकास हेतु शहर में कुछ अत्याधुनिक ऑडिटोरियम, कम्युनिटी हॉल

आदि बनाने की भी सरकार की योजना है। इस प्रकार इन्दौर नगर के सर्वांगीण, सुव्यवस्थित एवं नियोजित विकास के लिए सरकार कटिबद्ध है, परन्तु जनभागीदारी एवं जनसहमति के द्वारा ही ये कार्य योजनाएँ साकार रूप ले सकेंगी।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इन्दौर नगर पर विभिन्न होल्कर शासकों के शासन काल की अवधि एवं इस अवधि में उनके द्वारा इन्दौर के शहरीकरण की दिशा में किए गए कार्यों का विवरण देने का प्रयास किया गया है। साथ ही इन्दौर नगर के महानगर के रूप में विकसित होने की भावी संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

➤ उपसंहार

भारत के हृदयस्थल मध्यप्रदेश का सांस्कृतिक व औद्योगिक नगर 'इंदौर' अपने में अनेकों वर्षों का इतिहास समेटे हुए है। भिन्न-भिन्न कलाओं व संस्कृतियों की छटा बिखेरता, यह नगर आज भी पारम्परिक व नवीन संस्कृति का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। वर्तमान इन्दौर का जो स्वरूप आज हमें दिखाई देता है उसे इस स्वरूप तक लाने में अनेक लोगों ने योगदान दिया है। इन्दौर शहर अब नगर से महानगर की ओर अग्रसर है।

संदर्भ सूची -

1. राजन ,अनुपम - आयुक्त , इंदौर इतिहास,संस्कृति एवं पुरातत्व ,संचालनालय पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय , भोपाल-वर्ष -2016 -17, पृष्ठ -5
2. प्रेमनारायण, श्रीवास्तव - इंदौर जिला गजेटियर, प्रकाशक - जिला गजेटियर विभाग , वर्ष -1974 पृष्ठ -05
3. <https://indore.nic.in>
4. प्रेमनारायण, श्रीवास्तव - इंदौर जिला गजेटियर, प्रकाशक -जिला गजेटियर विभाग, वर्ष -1974 पृष्ठ -651
5. छजलानी, अभय, अपना इंदौर - भाग 4, लाभचंद प्रकाशन, वर्ष -2019, पृष्ठ - -106
6. यादव , शिवनारायण, अपना इंदौर -1, प्रकाशक - लाभचंद प्रकाशन इंदौर, वर्ष -1997, पृष्ठ-12
7. राव होल्कर, मधुसूदन, मराठा साम्राज्य के भीष्मपितामह धनगर कुलभूषण श्रीमंत महाराज मल्हारराव होल्कर (प्रथम), मल्हार प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2010, पृष्ठ -30
8. रायज्ञादा, अजित, इंदौर कार्यालय आयुक्त, पुरातत्व एवं संग्रहालय, मध्यप्रदेश .भोपाल, 1992, पृष्ठ – 9
9. लुआर्ड, कैप्टन सी ई, इंदौर स्टेट गजेटियर - खंड -2, सुप्रिंटेंट गवर्नमेंट प्रिंटिंग प्रेस, कोलकत्ता,वर्ष -1908, पृष्ठ – 16